ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 2.7825(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 12 | AUG - 2020

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

''आदिवासी समाज व संस्कृति की अवधारणा''

डॉ. गफार सिकंदर मोमीन

प्रस्तावना :

स्वदेशी — विदेशी मानव शास्त्रियों, समाज शास्त्रियों, भाषा शास्त्रियों तथा आदि के अनुसार आदिवासी शब्द की अवधारणा के विहंगावलोकन से लेकर उनके द्वारा निर्दिष्ट गुणधर्मों, विशिष्ट लाक्षणिकताओं एवं विशेषताओं के मद्देनजर अब कुछ हद तक 'कौन हैं आदिवासी' की अवधारणा करीब—करीब स्पष्ट हो जाती है। आदिवासी समाज व संस्कृति के समग्र आकलन से पूर्व 'सभ्यता और संस्कृति' की अवधारणा को स्पष्ट कर लेना अति आवश्यक है। 'सभ्यता' शब्द 'सभा' शब्द में क्रमश: 'यत्', 'तल्' एवं 'टाप्' प्रत्ययों के योग से निष्पन्न है। इसकी व्युत्पत्ति है, सभा — यत। सभ्य शब्द का शाब्दिक अर्थ है — व्यक्ति का गुण जो उसे किसी समाज, सभा, और देश के योग्य नागरिक बनाता है। अर्थात् व्यक्तियों का सामाजिक, नियमों और व्यवहारों को जानना, उसका पालन करना, समाज के अनुरूप ही आचरण करना और अनुशासन में बँधे रहना ही 'सभ्यता' है।

संस्कृति क्या है? उसको लेकर इसको कहीं पढ़ने में एक वाक्य आया था कि ''भूखा आदमी रोटी खाए यह प्रकृति है, अपनी रोटी में से दूसरे भूखे को दे, यह संस्कृति है, दूसरों की रोटी छीनकर खा जाए वह विकृति है।''[१] भारत में समाज शास्त्रियों, दर्शनशास्त्रियों, राजनीतिओं एवं शिक्षा विदों ने संस्कृति की विभिन्न परिभाषाएँ की है। डॉ. रामधारी सिंह दिनकर के अनुसार —''संस्कृति एक ऐसा गुण है जो हमारे जीवन में छाया हुआ है। एक आत्मिक गुण है जो मनुष्य स्वभाव में उसी प्रकार व्याप्त है, जिस प्रकार फूलों में सुगंध और दूध में मक्खन। इसका निर्माण एक या दो दिन में नहीं होता, युगयुगान्तर में होता है।''[२]

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि सुमित्रानन्दन पंत लिखते हैं कि ''संस्कृति को मैं मानवीय पदार्थ मानता हूँ, जिसमें हमारे जीवन के सूक्ष्म स्थूल दोनों धरा तलों के सत्यों का समावेश तथा हमारे ऊर्ध्व चेतना शिखर का प्रकाश और समदिक जीवन की मानसिक अपत्यकाओं की छायाएँ गुंफित हैं। उसके भीतर अध्यात्म, धर्म, नीति से लेकर सामाजिक रूढ़ि, रीति, तथा व्यवहारों का सौन्दर्य भी एक अन्तर सामंजस्य ग्रहण कर लेता हैं। संस्कृति को हमें अपने हृदय की शिराओं में बहने वाला मनुष्यत्व का रूधिर कहना चाहिए।''[३]

निष्कर्षत: संस्कृति की पूर्वोक्त तमाम देशी—विदेशी विद्वानों की परिभाषाओं के परिप्रेक्ष्य में कहा जा सकता है कि संस्कृति का संबंध मनुष्य की बुद्धि, स्वभाव और मनोवृत्तियों से है। इसकी सभ्यता से ही व्यक्ति अपना विकास करता है। अत: संस्कृति साधन और साध्य दोनों हैं। जब संस्कृति व्यक्ति तक ही सीमित रहती है तो व्यक्ति के व्यक्तित्व का और जब सम्पूर्ण जाति या समाज में प्रसार पा जाती है, तब राष्ट्रीय चेतना विकसित होती है।

भारतीय साहित्य के सबसे प्राचीनतम ग्रंथ वेंदों एवं मोहनजोदड़ों हड़प्पा के उत्खनन से प्राप्त तथ्यों से यह लगभग तय हो गया है कि भारतीय संस्कृति विश्व की सभी प्राचीन संस्कृतियों यूनान, मिस, रोम

इत्यादि से भी प्राचीन है। सिन्धु घाटी सभ्यता के विशेषज्ञों ने कोल जाति के भारत के मूलनिवासी होने के आधार पर इसे कोलारियन संस्कृति नामाभिधान प्रयुक्त किया है। अत: भारतभूमि को अपनी जन्मभूमि या घर बनाने वाली जनजाति कोल हैं। कालांतर में इसी जनजाति का नाम कोलमुंडा रखा गया है। डॉ. राधाकुमुद मुखर्जी ने अपनी पुस्तक 'प्रोटो ऑस्ट्रायड कल्चर कॉट्रिव्यूशंस' में स्पष्ट रूप में कहा है कि मुंडा कोलरियन के नाम से जाने जाते हैं और उनकी संख्या ६० लाख है। जिसमें भील, जुंग, करूबा, मुंडा आदि शामिल हैं। अत: भारतीय संस्कृति के इतिहास लेखकों ने अपने शोध ग्रंथों में स्पष्ट: लिखा है कि हम सब निषाद प्रजाति भील हैं, भारतीय संस्कृति और समाज के पृष्ठ में भील हैं। आज समस्त्र भारतीय भाषा साहित्य एवं संस्कृति में नाग, यक्ष, शबर, किरात, निषाद, भील प्रजाति का महान योगदान है। इन्हीं के मूल आधार और नीव पर भारतीय समाज और संस्कृति का विकास एवं जतन हुआ है।

भारतीय संस्कृति साझा संस्कृतियों से निर्मित है। विश्व की सबसे प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक हैं। भारत का आदिवासी समाज सदियों से अपनी विशिष्ट संस्कृति एवं परम्पराओं को बचाने में कामयाब रहा है। आदिवासी संस्कृति की भव्यता एवं दिव्यता के बयान से पूर्व गैर आदिवासी भारतीय संस्कृतियों के साथ के संबंधों का जिक्र भी आवश्यक है। अर्थात् आदिवासी समाज व संस्कृति के विहंगावलोकन के संदर्भ में आदिवासी और गैर आदिवासी समाजों के बीच इतिहास में क्या रिश्ता रहा है? इन सवालों पर भी विचार किया जाना आवश्यक है। भारत भर में वर्तमान समय में आदिवासियों को लेकर धडल्ले के साथ साहित्य सृजन किया जा रहा है। उनमें से ज्यादातर लेखक या साहित्यकार तो गैर आदिवासी ही हैं। कुछ तो मात्र साहित्य निर्माण के लिए भी लिखने वाले लोग हैं। ऐसी स्थिति में भारतीय साहित्य में आदिवासी समाज व संस्कृति का जो प्रतिबिम्ब मिलता है, वह न तो सम्पूर्ण है और न तो न्याय संगत ही है। प्राचीन भारतीय साहित्य में आदिवासी असुर थे, राक्षस थे, दानव थे, सब विकृतियों, दुर्गुणों से भरे बदसूरती के प्रतीक थे। पशुओं के सींग, पूँछ और लंबे—लंबे दाँतों से भरे पड़े थे। इसी संदर्भों में आदिवासी युवा पीढ़ी एवं समाज के जागरूक लोगों एवं आदिवासी लेखकों को आग्रह करते हुए आदिवासी कवि महादेव टोप्पो कह उठते हैं—

''इससे पहले कि वे पुन: तुम्हारा
अपने ग्रंथों में बंदर, भालू या किसी अन्य जानवर
के रूप में करें वर्णन
तुम्हें अपने आदमी होने की
तलाशनी होगी परिभाषा
उनके सिद्धान्तों, स्थापनाओं के विरूद्ध
उनके बर्बर वैचारिक हमलों के विरूद्ध
रचने होंगे, स्वयं ग्रंथ।''[४]

अत: आदिवासियों की इन विकृत परिभाषाओं को लेकर सामान्यत: गैर आदिवासी समाज एकमत हैं। इनके विपरीत भारत के आदिवासियों की संस्कृति बेहद समृद्ध है, चाहे वे देश के किसी भी कौने, किसी भी दशा में क्यों न जीवित हों। तथाकथित सभ्य समाज की निगाह में आदिवासी गरीब, असहाय, जंगली बर्बर, और असभ्य है, परन्तु यह धारणा बिल्कुल गलत है। दूसरी बात यह कि सभ्यता क्या है, इसे शब्दों में व्यक्त करना न केवल कठिन है बल्कि मुश्किल भी है। यह सुनिश्चित तथ्य है कि भारतीय संस्कृति साझा संस्कृतियों के समन्वय की देन है। अत: इस सांस्कृतिक धारा के निर्माण में अनेक प्रान्तीय समूहों, आंतरिक आदिवासी समूहों तथा बाह्य विजेता समूहों की परम्पराओं का काफी योगदान रहा है। इसमें कोई दो राय नहीं कि अनेकानेक संश्लिष्ट संस्कृतियों के सम्मिश्रण से ही महानतम भारतीय संस्कृति का निर्माण हुआ है। अर्थात् वर्तमान भारतीय संस्कृति की यह एक महती विशेषता है कि कुछ हद तक ही क्यों न हो, उसके भीतर अनेकानेक बहुरंगी एवं बहुढंगी संस्कृतियों जीवित रही हैं। अत: भारतीय संस्कृति की संरचना एक लंबी सांस्कृतिक परम्परा का परिणाम हैं। इस सांस्कृतिक संक्रमण की सुदीर्ध प्रक्रिया के दौरान ज्यादातर संस्कृतियाँ भारतीय संस्कृतियों में इस तरह घुल मिल गई हैं कि उनका अपना

स्वतंत्र अस्तित्व ही समाप्त हो गया है। लेकिन यह गौरतलब है कि जिसे मूल भारतीय संस्कृति का उत्सक कहा जाता है ऐसी प्राचीनतम मुंडा (आदिवासी) संस्कृति ने पहाड़ो एवं गिरी कंदराओं में सदियों से अपनी अलहदा सांस्कृतिक पहचान कायम रखी है। इस प्रकार आधुनिकतम भारतीय संस्कृति की रचना प्रक्रिया में भारत के आदिवासियों का न केवल योगदान है अपितु यह कहा जा सकता है कि मूल भारतीय प्राचीनतम आदिवासी मुंडा संस्कृति का नवीतम संस्करण ही आधुनिक भारतीय संस्कृति है। वर्तमान भारतीय संस्कृति में ऐसे अनेकानेक उत्तम तत्व विद्यमान है, जिसके चलते विश्व की प्राचीन संस्कृतियों के समक्ष इस संस्कृति की अपनी विशिष्टतम पहचान कायम है। इसमें बिल्कुल अतिशयोक्ति नहीं होगा कि उन तमाम उम्दा तत्वों में ज्यादातर तत्व आदिवासियों की सांस्कृतिक विरासत हैं। अत: भारतीय आदिवासी समुदायों की वे तमाम विशेषताएँ जिनके चलते यह संस्कृति भारत की अन्य संस्कृतियों के समक्ष आज के युग में सबसे अनूठी संस्कृति के रूप में गौरवान्वित किया जा सकता है।

भारत में जिस तरह अनेकता में एकता के दर्शन होते हैं, ठीक उसी तरह भारत के अनेक समुदायों में भी परस्पर अनेक विध एकता मौजूद है। भारत में करीब—करीब ४२६ आदिवासी समुदाय निवास करते हैं। कुछ विद्वानों ने यह आकड़ा ६३० तक भी बताया है। आदिवासी समुदायों की संख्या जो भी हो, किन्तु प्रत्येक आदिवासी समुदाय का अपना अलग भौगोलिक क्षेत्र, विशिष्ट संस्कृति एवं अपनी एक अलग पहचान है। अत: प्रत्येक आदिवासी समुदाय की अपनी विशिष्ट पहचान के चलते परस्पर आदिवासी समुदायों के बीच सांस्कृतिक दृष्टि से कुछ तात्विक अंतर भी मिलता है। इसके बावजूद भी प्रत्येक आदिवासी समुदायों में ऐसे खूबसूरत पहलू समान रूप से पाए गए है, जो भारत के आदिवासियों की संस्कृति को विशिष्टतम बनाते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

१. अरावली उद्घोष, संपा. बी. पी. वर्मा, 'पथिक', अंक ६३, पृ. ३
२. भारतीय समाज एवं संस्कृति, संपादक — डॉ. राजकुमार, पृ. २
३. भारतीय समाज एवं संस्कृति, संपादक — डॉ. राजकुमार, पृ. २
४. निज घरे परदेसी, रमणिका गुप्ता, पृ. २९